4

प्राथमिक स्तर पर अल्पसंख्यक समुदाय की शालात्यागी बालिकाओं के विद्यालय छोड़ने-संबंधी कारकों का अध्ययन

अय्याज़ अहमद खान*

शालात्यागी बालिकाओं से तात्पर्य उन प्रतिभागियों से है जो किसी कारणवश अपने शैक्षिक चक्र या शिक्षा पूर्ण करने से पहले ही स्कूल की सदस्यता छोड़ दते हैं। इस शोध पत्र में प्राथमिक स्तर पर अल्पसंख्यक समुदाय की शालात्यागी बालिकाओं की पारिवारिक और संस्थागत पृष्ठभूमि का अध्ययन किया गया है। इसके अतिरिक्त अल्पसंख्यक (मुस्लिम) समुदाय की बालिकाओं के परिपेक्ष्य में विद्यालय छोड़ देने संबंधी कारकों के अध्ययन का भी प्रयास किया गया है। प्रतिदर्श इकाई के रूप में पश्चिम बंगाल राज्य के मुर्शिदाबाद जनपद के कुल 32 अल्पसंख्यक (मुस्लिम) समुदाय की शालात्यागी बालिकाओं तक तुषारपिंडीय प्रतिचयन विधि द्वारा पहुँचा गया और उनकी प्रतिक्रियाएँ ली गईं। प्रदत्त संकलन हेतु उपकरण के रूप में स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया है। इस शोध अध्ययन में परिणामस्वरूप यह पाया गया है कि अधिकतम अल्पसंख्यक (मुस्लिम) समुदाय की शालात्यागी बालिकाओं का संबंध सामान्य वर्ग संयुक्त परिवार से है तथा इनके अभिभावक कम शिक्षित हैं। वहीं व्यावसायिक रूप से अधिकतर लड़कियों के पिता दैनिक मज़दूर और माताएँ गृहिणी हैं। संस्थागत पृष्ठभूमि के आधार पर यह ज्ञात होता है कि अधिकांश अल्पसंख्यक (मुस्लिम) समुदाय की शालात्यागी बालिकाएँ ग्रामीण क्षेत्र से तथा सरकारी सहायता प्राप्त स्कूल में नामांकित हैं। वहीं अधिकांश प्रतिभागियों ने पारिवारिक गरीबी, व्यक्तिगत स्वास्थ्य समस्या और घरेलू कार्य में संलिप्तता को प्राथमिक स्तर पर विद्यालय छोड़ देने का प्रभावी कारक माना है।

आधुनिक युग में शिक्षा समाज के विकास के लिए सबसे महत्वपूर्ण पहलू है। शिक्षा एक आवश्यकता के साथ हर व्यक्ति का मौलिक अधिकार भी है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम (2009) के अंतर्गत 6 से 14 वर्ष की आयु के सभी बच्चों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार देता है। साथ ही यह भी निर्देश देता है कि कोई बच्चा स्कूल में प्रवेश से वंचित न रहे, भले ही उसके पास आयु-प्रमाण पत्र

*असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग-मुर्शिदाबाद, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़ 202 001

© NCERT not to be republished

न हो। निस्संदेह इस अधिनियम के कार्यान्वयन से प्राथमिक विद्यालयों के आधारभूत सुविधाओं और मानव संसाधनों में सुधार हुआ है। दुर्भाग्य से आज भी कुछ ऐसे विद्यार्थी हैं, जो नामांकन के उपरांत निर्धारित शैक्षिक स्तर के पहले ही शिक्षा अथवा स्कूल को छोड़ देते हैं, उसे हम शालात्याग कहते है। इस प्रघटना को दो तरह से परिभाषित किया गया है। प्रथम अर्थ में शालात्याग करने वाले उन बच्चों को संदर्भित करता है, जो शिक्षा चक्र को पूरा किए बिना संस्था से अपनी सदस्यता समाप्त कर लेते हैं (अग्निहोत्री, 2010)। वहीं दूसरे अर्थ में वे सभी बच्चे जो शिक्षा चक्र के किसी एक पायदान पर पहुँचने के उपरांत अगले पायदान पर नामांकित नहीं होते हैं (सिंह और राय; 2020)।

शाला त्यागना एक सार्वभौमिक और बहुआयामी प्रघटना है, जो शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर पाई जाती है। स्वतंत्रता के पश्चात शिक्षा के प्रसार हेतु भारत सरकार द्वारा समय-समय पर नीतियाँ और योजनाएँ बनाई गईं, जिसका लक्ष्य देश के प्रत्येक बालक-बालिका को विद्यालय से जोड़ना अर्थात स्कूल में नामांकन दर में वृद्धि और साथ ही इनके ठहराव को सुनिश्चित करना है। सर्व शिक्षा अभियान, मध्याह्न भोजन योजना और शिक्षा का अधिकार अधिनियम जैसी पहल के माध्यम से भारत ने हाल के वर्षों में विद्यालय स्तर पर नामांकन दर की वृद्धि में उल्लेखनीय प्रगति की है। निश्चित रूप से इन सभी नीतियों और योजनाओं के परिणामस्वरूप प्रत्येक स्तर पर शालात्यागी बच्चों की दरों में गिरावट देखी गई है। हालाँकि, शालात्यागी बच्चों की दर में प्रत्यक्ष गिरावट और इस दिशा में निरंतर प्रयासों के बावजूद आज भी ये समस्या एक चिंता का विषय है। गौड़ा और शेखर (2014) ने अपने अध्ययन में पाया कि मुस्लिम, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति में शालात्यागी बच्चों की संख्या सबसे अधिक है। इस समस्या की गंभीरता को समझते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) ने इस संदर्भ में कहा है, "स्कूली शिक्षा प्रणाली के प्रथम लक्ष्यों में हमें यह सुनिश्चित करना है कि बच्चों का स्कूल में नामांकन हो और उन्हें नियमित रूप से विद्यालय भेजा जाए"। जिला शिक्षा सूचना प्रणाली (यू-डाइस प्लस) ने वर्ष 2019–2020 के वार्षिक रिपोर्ट में प्राथमिक, उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर शालात्याग दर क्रमश: 1.5, 2.6 और 16.1 प्रतिशत रेखांकित किया, जो पूर्णरूप से यह दर्शाता है कि सरकारी पहल के बावजूद आज भी ज़मीनी स्तर पर शालात्याग के मामले मौजूद हैं।

शोध समस्या का औचित्य

भारत में शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने में शालात्याग की समस्या सबसे बड़ी बाधा है। यह समस्या प्रत्येक समुदाय, जाति, वर्ग और लिंग में पाई जाती है। समकालीन समाज में शिक्षित लड़कियों से तर्कसंगत, स्वतंत्र और सशक्त होने की उम्मीद की जाती है, शैक्षिक प्राप्ति में जेंडर असमानता एक अहम मुद्दा है, जो मुस्लिम समुदाय के संदर्भ में अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि मुस्लिम समुदाय शैक्षिक और आर्थिक रूप से सबसे अधिक पिछड़ा अल्पसंख्यक समुदाय है (प्रधानमंत्री की उच्चस्तरीय

© NCERT not to be republished

समिति, 2006)। वही अगर साक्षरता दर की बात करें तो जनगणना (2011) के अनुसार जहाँ देश की औसत साक्षरता दर 72.04 प्रतिशत है, वहीं पुरुष एवं महिला में ये दर क्रमशः 82.14 और 65.46 प्रतिशत है। जबकि मुस्लिम समुदाय में साक्षरता दर 59.1 प्रतिशत है, वहीं पुरुष एवं महिला में ये दर क्रमशः 67.6 और 50.1 प्रतिशत है। इन आँकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि मुस्लिम महिलाओं की साक्षरता दर मुस्लिम पुरुषों की तुलना में 17.5 प्रतिशत कम है और राष्ट्रीय औसत महिला साक्षरता दर से 15.36 प्रतिशत कम है। अतः शिक्षा के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों के संदर्भ में यह आवश्यक है कि मुस्लिम लड़कियों के शालात्याग करने से संबंधी कारकों का अध्ययन किया जाए, जिसका प्रयास शोधार्थी ने इस अध्ययन के माध्यम से किया है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

शालात्याग से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन के अंतर्गत बरुआह और गोस्वामी (2012) ने अपने शोध अध्ययन में पाया कि घरेलु कार्य में संलिप्तता, मार्गदर्शन की कमी, परिवार का आकार और निम्न आर्थिक स्थिति, परीक्षा में असफलता, रुचि की कमी, व्यक्तिगत स्वास्थ्य समस्या, अभिभावक की अशिक्षा, शिक्षकों द्वारा दंडित करना, आदि प्राथमिक स्तर पर बच्चों के स्कूल छोड़ने का मुख्य कारण हैं। गौड़ा और शेखर (2014) ने शालात्याग के अग्रणी कारकों के रूप में घर के आकार, बच्चों की संख्या, माता-पिता की शिक्षा, परिवार की आर्थिक तंगी, पढ़ाई में रुचि का आभाव, आदि को निर्धारित किया है। इसी प्रकार अहीर (2015) ने बच्चों के स्कूल छोड़ने के प्रमुख कारणों के रूप में वित्तीय संसाधनों की कमी, रुचि की कमी, माता-पिता की धारणाएँ, अपेक्षित परिणाम न होना, आदि को निर्धारित किया हैं। साथ ही लड़कियों के संदर्भ में घर के काम और भाई-बहनों की देखभाल को कारण पाया है। कोका (2017) ने जम्मू और कश्मीर के जनपद पुलवामा पर किए गए अध्ययन में पाया कि पारिवारिक गरीबी, घरेलू काम में व्यस्तता, स्कूल से दूरी, छात्राओं की सुरक्षा, परीक्षा की दोषपूर्ण प्रणाली, कक्षा में बैठने की खराब व्यवस्था, माता-पिता की अशिक्षा, पढ़ाई में रुचि की कमी, आदि कारणों से बच्चें स्कूल छोड़ देते हैं। वहीं पिल्लई (2019) ने पुणे जनपद पर खोजपूर्ण अध्ययन में पाया कि ड्रॉपआउट को प्रभावित करने वालो कारकों में व्यक्तिगत, प्रवास और आर्थिक कारण प्रमुख हैं। सलमान (2020) ने दिल्ली में माध्यमिक स्तर पर मुस्लिम लड़कों के ड्रॉपआउट-संबंधी कारणों के अध्ययन में यह पाया कि लड़कों में स्कूल छोड़ने का मुख्य कारण शिक्षा के प्रति अरुचि और स्व-रोजगार है। मजूमदार और मित्रा (2020) ने पश्चिम बंगाल में शालात्यागी बच्चों पर एक केस अध्ययन में पाया कि समृद्ध परिवार और शिक्षित माता-पिता के बच्चों का स्कूल छोड़ने की संभावना कम होती है।

वहीं लड़कियों के विशेष संदर्भ में शालात्याग की प्रघटना का साहित्यिक सर्वेक्षण के अंतर्गत अली (2014) ने पश्चिम बंगाल के मालदा जनपद

© NCERT not to be republished

में मुस्लिम समुदाय के प्राथमिक शिक्षा छोड़ने की समस्या का लिंग और आर्थिक स्थिति के संबंध में एक तुलनात्मक अध्ययन किया। इसमें इन्होंने पाया कि बच्चों को प्राथमिक शिक्षा से वापस लेने का माता-पिता का निर्णय उनके लिंग पर नहीं, बल्कि परिवार की आर्थिक स्थिति पर निर्भर करता है। शाहिदुल और करीम (2015) ने मलेशिया में स्कूल शालात्याग पर आधारित अध्ययन में यह पाया कि कई अंतर-संबंधित सामाजिक, आर्थिक, संस्थागत और सांस्कृतिक कारक हैं जो लड़कियों के शालात्याग दर को बढ़ाते है। पटनायक और गुंडेमेडा (2016) ने ओडिशा में शालात्यागी लड़कियों के अध्ययन में यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि जन्म-क्रम, जाति, परिवार के प्रकार, परिवार की आर्थिक स्थिति, माता-पिता की शिक्षा एवं व्यवसाय, आदि कारक लड़कियों की शिक्षा को प्रभावित करते हैं। सेनगुप्ता और रूज (2018) ने भारत में मुस्लिम समुदाय की शिक्षा में लैंगिक असमानता को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन किया और पाया कि परिवार की निम्न आर्थिक स्थिति ही शिक्षा में मुस्लिम लड़कियों की भागीदारी को कम करती है। साथ ही लैंगिक असमानता के लिए अभिभावक की अशिक्षा को ज़िम्मेदार पाया है। पटेल और अन्य (2018) ने ग्रामीण भारत में लड़कियों के स्कूल छोड़ने के समग्र सामुदायिक प्रभावों के अध्ययन में पाया कि पारिवारिक गरीबी और माँ की असाक्षरता के कारण शालात्याग की संभावना लड़कियों में तीन गुना अधिक है।

अध्ययन के उद्देश्य

- प्राथमिक स्तर पर शालात्यागी मुस्लिम लड़कियों की पारिवारिक और संस्थागत पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
- मुस्लिम लड़कियों के परिपेक्ष्य में प्राथमिक स्तर पर शालात्याग-संबंधी कारकों का अध्ययन करना।

शोध का परिसीमन

प्रस्तुत शोध कार्य पश्चिम बंगाल राज्य के मुर्शिदाबाद जनपद के मुस्लिम लड़कियों तक सीमित किया गया है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध एक वर्णनात्मक अध्ययन है। शोध की प्रकृति मात्रात्मक है।

जनसंख्या तथा प्रतिदर्श

प्रस्तुत शोध पश्चिम बंगाल राज्य के मुर्शिदाबाद जनपद के शालात्यागी मुस्लिम लड़कियों पर आधारित है। अतएव इस शोध की जनसंख्या मुर्शिदाबाद जनपद की सभी मुस्लिम लड़कियाँ हैं, जिन्होंने प्राथमिक स्तर की शिक्षा पूरी किए बिना स्कूल छोड़ दिया था। प्रतिदर्श के चयन हेतु सर्वप्रथम मुर्शिदाबाद जनपद के पाँच अनुमंडलों में से जंगीपुर अनुमंडल का चयन अन्वेषक ने अपनी सुविधानुसार किया है। इसके बाद जंगीपुर अनुमंडल के 7 प्रखंडों में से समसेरगंज का

© NCERT not to be republished

चयन शोधार्थी ने इसकी न्यूनतम साक्षरता दर (54.98 प्रतिशत) के आधार पर किया। तत्पश्चात शालात्यागी मुस्लिम लड़कियों तक पहुँचने के लिए तुषारपिंडीय प्रतिचयन विधि (Snowball Sampling Method) का उपयोग किया गया है। अतः प्रतिदर्श के रूप में कुल 32 शालात्यागी मुस्लिम लड़कियों को शामिल किया गया है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया है। इस प्रश्नावली के सभी प्रश्नों का चयन शालात्याग साहित्यिक सर्वेक्षण और साक्षात्कार के आधार पर किया गया था। इस प्रश्नावली में कुल 14 प्रश्न थे, जो दो खंडों में विभाजित हैं। खंड 'क' में शालात्यागी मुस्लिम लड़कियों के पारिवारिक और संस्थागत पृष्ठभूमि संबंधी 6 प्रश्न थे, जिसमें मुख्यतः प्रतिभागी की जाति, परिवार के प्रकार, माता-पिता की शिक्षा, माता-पिता का व्यवसाय, स्कूल के प्रकार, स्कूल का स्थान आदि हैं। खंड 'ख' में मुस्लिम लड़कियों के शालात्याग-संबंधी कारकों पर आधारित 8 प्रश्न थे, जिसमें मुख्यतः पारिवारिक गरीबी, घरेलू कार्य में संलिप्तता, व्यक्तिगत स्वास्थ्य समस्या, पढ़ाई में अरुचि, परीक्षा में असफलता, अभिभावक की शिक्षा, स्कूल से दूरी और असुरक्षा की भावना है। इस खंड में प्रश्नों को तीन स्तरों— सहमत, उदासीन तथा असहमत पर प्रतिक्रियाएँ ली गईं। जिसमें प्रतिभागी को एक विकल्प के सामने सही का चिह्न लगाना था।

आँकड़ों के संकलन की प्रक्रिया

आँकड़ों के संग्रहण हेतु शोधार्थी द्वारा समसेरगंज प्रखंड के शालात्यागी मुस्लिम लड़कियों तक तुषारपिंडीय प्रतिचयन विधि के माध्यम से पहुँचा गया और प्रश्नावली भरवाई गई। आँकड़ों का संग्रह वर्ष 2022 के अगस्त माह में पूरा किया गया था।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

इस सोपान के अंतर्गत संकलित आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या उद्देश्यवार प्रस्तुत की गई है। प्रश्नावली के प्रत्येक खंड के विभिन्न प्रश्नों एवं कथनों पर प्रतिभागियों की प्रतिक्रियाओं की आवृत्ति को प्रतिशत में बदलकर विभिन्न तालिकाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

प्रथम उद्देश्य— प्राथमिक स्तर पर शालात्यागी मुस्लिम लड़कियों की पारिवारिक और संस्थागत पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।

तालिका 1— जातीय श्रेणी और मुस्लिम लड़कियों का शालात्याग

जातीय श्रेणी	आवृत्ति	प्रतिशत
सामान्य वर्ग	18	56.25
अन्य पिछड़ा वर्ग	14	43.75
कुल	32	100.00

तालिका 1 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि 56.25 प्रतिशत शालात्यागी मुस्लिम लड़कियाँ सामान्य वर्ग से हैं, जबकि 43.75 प्रतिशत अन्य पिछड़े वर्ग से है। अतः प्राप्त आँकड़ों के आधार पर हम कह सकते है कि अधिकांश शालात्यागी मुस्लिम लड़कियाँ सामान्य वर्ग से आती हैं।

© NCERT not to be republished

तालिका 2— पारिवारिक पृष्ठभूमि और मुस्लिम लड़कियों का शालात्याग

चर		श्रेणी	आवृत्ति	प्रतिशत
परिवार के प्रकार		संयुक्त परिवार	21	65.63
		एकल परिवार	11	34.37
शैक्षिक योग्यता	पिता	निरक्षर	10	31.25
	माता		14	43.75
	पिता	प्राथमिक	11	34.37
	माता		09	28.12
	पिता	उच्च-प्राथमिक	08	25.00
	माता		05	15.63
	पिता	माध्यमिक	02	06.25
	माता		04	12.50
	पिता	उच्चत्तर माध्यमिक	01	03.13
	माता		00	00.00
व्यवसाय	पिता	खेती/किसानी	07	21.87
		दैनिक मज़दूरी	13	40.63
		अपनी दूकान	05	15.63
		छोटा व्यापार	07	21.87
	माता	दैनिक मज़दूरी	04	12.50
		घरेलु कार्य	28	87.50

तालिका 2 में प्रस्तुत आँकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि प्राथमिक स्तर 65.63 प्रतिशत शालात्यागी मुस्लिम लड़कियों का संबंध संयुक्त परिवार से हैं, जबकि 34.37 प्रतिशत का संबंध एकल परिवार से हैं। अतः कहा जा सकता है कि संयुक्त परिवार की मुस्लिम लड़कियों की शालात्याग संख्या एकल परिवार की तुलना में अधिक है। इसका कारण यह हो सकता है कि संयुक्त परिवार की महिलाओं पर घरेलु कार्य का बोझ अधिक होता है, जिसकी वजह से लड़कियों को घर के कामों में हाथ बँटाना पड़ता है। संभवतः घरेलू कार्यों में संलग्न होने के कारण ये लड़कियाँ स्कूल छोड़ देती हैं। बरुआह

© NCERT not to be republished

और गोस्वामी (2012), पटनायक और गुंडेमेडा (2016) ने अपने अध्ययनों में परिवार के आकर को ड्रॉपआउट का कारण पाया है। वहीं अभिभावक की शैक्षिक योग्यता के आधार पर निरक्षर, प्राथमिक शिक्षा, उच्च-प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा एवं उच्चत्तर माध्यमिक शिक्षा प्राप्त मुस्लिम माता-पिता की लड़कियों का ड्रॉपआउट क्रमशः 43.75 व 31.25, 28.12 व 34.37, 15.63 व 25.00, 12.5 व 6.25 और शून्य व 3.13 प्रतिशत है। अतः प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि अधिकांश शालात्यागी मुस्लिम लड़कियों के माता-पिता प्राथमिक स्तर और इससे कम शिक्षित है। इसी तरह का परिणाम पटनायक और गुंडेमेडा (2016) और कोका (2017) ने भी अपने शोध अध्ययन में पाया है। वहीं कई शोध अध्ययनों में यह पाया गया है कि माता-पिता का कम शिक्षित होना लड़कियों के शालात्याग का एक कारण है (पटनायक और गुंडेमेडा, 2016; पटेल और अन्य, 2018)। शालात्यागी मुस्लिम लड़कियों के पिता मुख्य रूप से खेती/किसानी (21.87 प्रतिशत), दैनिक मज़दूरी (40.63 प्रतिशत), अपनी दूकान (15.63 प्रतिशत) तथा छोटा व्यापार (21.87 प्रतिशत), आदि व्यवसाय से जुड़े हुए है। जबकि माताएँ मुख्य रूप से घरेलु कार्य (87.50 प्रतिशत) करती हैं। अतः प्राप्त आँकड़ों के आधार पर हम कह सकते है कि व्यावसायिक रूप से अधिकांश शालात्यागी मुस्लिम लड़कियों के पिता दैनिक मज़दूरी करते हैं और माताएँ गृहिणी हैं।

तालिका 3— संस्थागत पृष्ठभूमि और मुस्लिम लड़कियों का शालात्याग

चर	श्रेणी	आवृत्ति	प्रतिशत
स्कूल का स्थान	शहरी	02	06.25
	ग्रामीण	30	93.75

तालिका 3 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 93.75 प्रतिशत शालात्यागी मुस्लिम लड़कियों का संबंध ग्रामीण क्षेत्र से है, जबकि 6.25 प्रतिशत का संबंध शहरी क्षेत्र से हैं। इसकी एक वजह शायद यह हो सकती है कि ग्रामीण क्षेत्रों के अधिकांश परिवार की सामाजिक आर्थिक स्थिति निम्न स्तर की होती है और घरेलु कार्यों में लड़कियों को भी हाथ बटाना पड़ता है, जिसकी वजह से ये लड़कियाँ पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पातीं और धीरे-धीरे पढ़ाई छोड़ देती हैं। इसी प्रकार प्रतिभागियों की प्रतिक्रियाओं के विश्लेषण से पता चलता है कि सभी शालात्याग सरकारी सहायता प्राप्त स्कूल से संबंधित हैं। इसी तरह का परिणाम कोका (2017) ने अपने शोध में पाया कि परीक्षा की दोषपूर्ण प्रणाली और कक्षा में बैठने की खराब व्यवस्था के कारण शालात्याग की प्रघटना होती है।

द्वितीय उद्देश्य

मुस्लिम लड़कियों के परिपेक्ष्य में प्राथमिक स्तर पर शालात्याग-संबंधी कारकों का अध्ययन करना।

इसके अंतर्गत प्राथमिक स्तर पर शालात्याग-संबंधी कारकों पर आधारित प्रश्नों की प्रतिक्रियाओं को प्रतिशत में प्रस्तुत किया गया है।

© NCERT not to be republished

तालिका 4— शालात्याग-संबंधी कारकों के संदर्भ में मुस्लिम लड़कियों की प्रतिक्रियाएँ

क्र.सं.	कथन	असहमत (%)	उदासीन (%)	सहमत (%)
1.	क्या पारिवारिक गरीबी के कारण लड़कियाँ स्कूल छोड़ देती हैं?	12.50	3.12	84.38
2.	क्या घरेलू कार्य में संलिप्तता लड़कियों की शालात्याग के लिए ज़िम्मेदार है?	15.63	6.25	78.12
3.	क्या व्यक्तिगत स्वास्थ्य समस्या की वजह से लड़कियाँ स्कूल छोड़ देती हैं?	15.63	3.12	81.25
4.	क्या पढ़ाई में अरुचि के कारण लड़कियाँ स्कूल छोड़ देती हैं?	28.13	21.87	50.00
5.	क्या परीक्षा में असफलता के कारण लड़कियाँ स्कूल छोड़ देती हैं?	68.75	9.38	21.87
6.	क्या अभिभावक की कम शिक्षा के कारण लड़कियों में शालात्याग की प्रघटना है?	37.50	15.63	46.87
7.	क्या स्कूल से दूरी के कारण लड़कियाँ स्कूल छोड़ देती हैं?	78.12	3.12	18.76
8.	क्या असुरक्षा की भावना से लड़कियाँ स्कूल छोड़ देती हैं?	93.75	00	6.25

तालिका 4 में प्राथमिक स्तर पर शालात्याग-संबंधी कारकों के प्रति मुस्लिम लड़कियों की प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करने से पता चलता है कि 84.38 प्रतिशत लड़कियाँ पारिवारिक गरीबी को शालात्याग का कारक मानती हैं। 81.25 प्रतिशत मुस्लिम लड़कियों का मत है कि व्यक्तिगत स्वास्थ्य समस्या के कारण लड़कियाँ स्कूल छोड़ देती हैं। 78.12 प्रतिशत मुस्लिम लड़कियों का मानना है कि घरेलू कार्य में संलिप्तता शालात्याग की वजह हैं, जबकि शालात्यागी मुस्लिम लड़कियों में 50 प्रतिशत पढ़ाई में रुचि की कमी और 46.87 प्रतिशत अभिभावक की शिक्षा को कारण मानती हैं। वहीं शालात्यागी मुस्लिम लड़कियों में केवल 6.25 प्रतिशत असुरक्षा की भावना, 18.76 प्रतिशत स्कूल से दूरी और 21.87 प्रतिशत परीक्षा में असफलता को कारक मानती हैं।

अतः प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण के आधार पर हम कह सकते है कि मुस्लिम लड़कियों के शालात्याग के लिए पारिवारिक गरीबी, व्यक्तिगत स्वास्थ्य समस्या और घरेलू कार्य में संलिप्तता महत्वपूर्ण कारक हैं। कई शोध अध्ययनों में आर्थिक तंगी को शालात्याग का एक प्रमुख कारक पाया गया है (बरुआह और गोस्वामी, 2012; अली, 2014; गौड़ा और शेखर, 2014; पटनायक और गुंडेमेडा, 2016; कोका, 2017; सेनगुप्ता और रूज, 2018; पटेल और अन्य, 2018; पिल्लई, 2019; मजूमदार और मित्रा, 2020; सलमान, 2020)। बरुआह और गोस्वामी (2012) ने प्राथमिक स्तर पर ड्रॉपआउट के लिए व्यक्तिगत स्वास्थ्य समस्या को कारक बताया है। इसी प्रकार घरेलू कार्य में व्यस्तता को बरुआह और गोस्वामी (2012), अहीर (2015) और कोका (2017)

© NCERT not to be republished

ने कारक माना हैं। इसकी वजह शायद यह भी हो सकती है कि बड़े या संयुक्त परिवार में महिलाओं पर गृहस्थी कार्यों का दबाव अधिक होता है, जिसके कारण लड़कियों को गृहस्थी के कार्यों में हाथ बटाना पड़ता है।

निष्कर्ष

शोध आँकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त परिणामों के आधार पर निम्न निष्कर्ष निकलते हैं—

- पारिवारिक पृष्ठभूमि के आधार पर अधिकांश शालात्यागी मुस्लिम लड़कियों का संबंध सामान्य वर्ग और संयुक्त परिवार से है। वहीं अधिकतर लड़कियों के माता-पिता निरक्षर या प्राथमिक शिक्षा प्राप्त हैं, जबकि व्यावसायिक रूप से अधिकतम प्रतिभागियों के पिता दैनिक मज़दूर और माताएँ गृहिणी है।
- संस्थागत पृष्ठभूमि के आधार पर यह ज्ञात होता है कि अधिकांश शालात्यागी मुस्लिम लड़कियाँ ग्रामीण क्षेत्र के अंतर्गत आती हैं।
- प्राथमिक स्तर पर शालात्याग के प्रभावी कारक के रूप में अधिकांश मुस्लिम लड़कियों ने पारिवारिक गरीबी, व्यक्तिगत स्वास्थ्य समस्या और घरेलू कार्य में संलिप्तता को माना है।

शोध के शैक्षिक निहितार्थ

वर्तमान शोध अध्ययन के निष्कर्षों के विश्लेषण से निम्नलिखित शैक्षिक निहितार्थ प्राप्त हुए हैं—

- मुस्लिम अभिभावकों की शैक्षिक जागरूकता पर बल दिया जाना चाहिए, ताकि वे शिक्षा के महत्व को समझें और बेटियों को शिक्षा का समान अवसर प्रदान करे।
- सरकारी स्कूलों की शिक्षा में सुधार हेतु सरकार को चाहिए कि स्कूलों के बुनियादी ढाँचे को बेहतर करें और साथ ही शिक्षकों की कमी का तुरंत निपटारा करे।
- सरकारी स्कूलों में शिक्षकों को विद्यार्थियों के साथ संलग्नता को बढ़ावा देना चाहिए, जिससे विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति धनात्मक दृष्टिकोण का विकास होगा।
- मुस्लिम समुदाय में लड़कियों के शिक्षा स्तर को बेहतर करने के लिए नियमित पाठ्यक्रम के साथ हस्तशिल्प, कंप्यूटर प्रशिक्षण, सिलाई, बुनाई, आदि जैसे विभिन्न व्यावसायिक प्रशिक्षण को स्कूल में लागू करने की आवश्यकता है, ताकि शिक्षा के साथ इन्हें आर्थिक रूप से सबल बनाया जाए।

संदर्भ

अग्निहोत्री, आर. 2010. *आधुनिक भारतीय शिक्षा— समस्याएँ और समाधान*. पृ. 56. हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर.

अली, ए.एम. 2014. ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑन द ड्रॉपआउट प्रॉब्लम इन प्राइमरी एजुकेशन अमंग मुस्लिम कम्युनिटी इन रिलेशन टु जेंडर एंड इकनोमिक स्टेटस. *ई.ओ.एस.आर. जर्नल ऑफ हयूमैनिटिज एंड सोशल साइंस*. 19(12), पृ.सं. 76–78. https://www.iosrjournals.org/iosr-jhss/papers/Vol19-issue12/Version-1/L0191217678.pdf

अहीर, के.वी. 2015. ड्रॉपआउट्स इन स्कूल एजुकेशन इन इंडिया— मैगनीटुड एंड रीजन्स. *इंडियन जर्नल ऑफ रिसर्च*. 4(5), पृ.सं. 363–364. https://www.worldwidejournals.com/paripex/recent_issues_pdf/2015/May/May_2015_1431776966__118.pdf

© NCERT not to be republished

कोका, ए.ए. 2017. कॉसेस ऑफ स्कूल ड्रॉपआउट्स इन जम्मू एंड कश्मीर वीद स्पेशल रिफरेंस टु डिस्ट्रिक्ट पुलवामा. https://dx.doi.org/10.2139/ssrn.3323794

गौड़ा, एम., सतीश और टी.वी. शेखर. 2014. फैक्टर्स लीडिंग टु स्कूल ड्रॉपआउट्स इन इंडिया— ऐन एनालिसिस ऑफ नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे-3 डाटा. *आई.ओ.एस.आर. जर्नल ऑफ रिसर्च एंड मेथड इन एजुकेशन*. 4(6), पृ.सं. 75–83. https://doi.org/10.9790/7388-04637583

पटनायक, डी. और एन. गुंडेमेडा. 2016. पुशआउट्स फ्रॉम स्कूलिंग— ए सोशियोलॉजिकल स्टडी ऑफ गर्ल्स एजुकेशन इन ओडिशा. *जर्नल ऑफ एजुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन*. 30(3), जुलाई, पृ.सं. 247–260. नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ एजुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन, नई दिल्ली.

पटेल, आर., ए.के. सिंह. एम. चंद्रा, टी. खन्ना, और एस. मेहरा. 2018. इस मदर एजुकेशन आर हाउसहोल्ड पावर्टी ए बेटर प्रिडिक्टर फॉर गर्ल्स स्कूल ड्रॉपआउट? *एविडेंस फ्रॉम अग्रेगेटेड कम्युनिटी इफेक्ट्स इन रूरल इंडिया*. https://www.hindawi.com/journals/edri/2018/6509815/

पिल्लई, टी.जे. 2019. ऐन एक्सप्लोरेटरी स्टडी ऑफ फैक्टर्स अफ्फेक्टिंग स्कूल ड्रॉपआउट्स ऑफ पुणे डिस्ट्रिक्ट. *इंडियन जर्नल ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी*. 12(36), पृ.सं. 1–7. https://dx.doi.org/10.17485/ijst/2019/v12i36/146942

प्रधानमंत्री की उच्चस्तरीय समिति. 2006. *भारत में मुसलमानों की सामाजिक, आथिक और शैक्षणिक स्थिति— एक रिपोर्ट*. पृ.सं. 237. भारत सरकार, नई दिल्ली.

बरुआह, एस.आर. और यु. गोस्वामी. 2012. फैक्टर्स इन्फ्लुएंसिंग स्कूल ड्रॉपआउट्स एट द प्राइमरी लेवल. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ फार्म साइंसेज*. 2(1), पृ.सं. 141–144. https://citeseerx.ist.psu.edu/viewdoc/download?doi=10.1.1.1017.4911&rep=rep1&type=pdf

मजूमदार, ए. और सी. मित्रा. 2020. ड्रॉपआउट बिहेवियर ऑफ चिल्ड्रेन— द केस ऑफ वेस्ट बंगाल. *इंडियन जर्नल ऑफ ह्यूमन डेवलपमेंट*. 14(2), पृ.सं. 275–289. https://www.researchgate.net/publication/344045965_Dropout_Behaviour_of_Children_The_Case_of_West_Bengal

यू-डाइस प्लस. 2019–2020. एकीकृत जिला शिक्षा सूचना प्रणाली की चर्चा की गई है. स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.

शाहिदुल, एस.एम. और ए.एच.एम.जेड. करीम. 2015. फैक्टर्स कंट्रीब्यूटिंग टु स्कूल ड्रॉपआउट अमंग द गर्ल्स— ए रिव्यु ऑफ लिटरेचर. *यूरोपियन जर्नल ऑफ रिसर्च एंड रिफ्लेक्शन इन एजुकेशनल साइंसेज*. 3(2), पृ.सं. 25–36. https://www.idpublications.org/wp-content/uploads/2015/02/Abstract-FACTORS-CONTRIBUTING-TO-SCHOOL-DROPOUT-AMONG-THE-GIRLS.pdf

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. भारत सरकार, नई दिल्ली.

सलमान, ए. 2020. आई फेल्ड टु वर्क हार्ड— रीजंस फॉर सेकेंडरी स्कूल ड्रॉपआउट अमंग मुस्लिम मैन इन दिल्ली. *कंटेम्परारी एजुकेशन डायलॉग*. 17(1), पृ.सं. 45–69. https://journals.sagepub.com/doi/pdf/10.1177/0973184919882795

सिंह, ए. और ए.के. राय. 2020. मुस्लिम समुदाय के प्रतिभागियों की विद्यालय ड्रॉपआउट की समस्याएँ एवं उनका परिप्रेक्ष्य. *भारतीय आधुनिक शिक्षा*. 41(1), पृ.सं. 101–113. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

सेनगुप्ता, आर. और डी. रूज. 2018. फैक्टर्स अफ्फेक्टिंग जेंडर डिस्पैरिटी इन मुस्लिम एजुकेशन इन इंडिया. https://doi.org/10.1177%2F2455133317737936

© NCERT not to be republished